[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No. 2019

Sr. No. of Question Paper : 2909 **JC**

Unique Paper Code : 12051502

Name of the Paper : Hindi Naatak / Ekanki (हिंदी नाटक/एकांकी)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi CBCS**

Semester : V

समय : 3 घण्टे

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निधारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए - (9×3=27)

(क) लरि बैदिक जैन डुबाई पुस्तक सारी।
करि कलह बुलाई जवनसैन पुनि भारी।।
तिन नासी बुद्धि बल विद्या धन बहु बारी।
छाई अब आलस-कुमति-कलह अँधियारी।।
भए अंध पंगु सब दीन-हीन बिलखाई।
हा हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई।।

P.T.O.

अथवा

संतोष ने भी बड़ा काम किया। राजा-प्रजा सबको अपना चेला बना लिया। अब हिंदुओं को खाने मात्र से काम, देश से कुछ काम नहीं। राज न रहा, पेनसन ही सही। रोजगार न रहा, सूद ही सही। वह भी नहीं, तो घर ही का सही, 'संतोष परम सुखं' रोटी ही को सराह-सराह के खाते हैं। उद्यम की ओर देखते ही नहीं। निरुद्यमता ने भी संतोष को बड़ी सहायता दी। इन दोनों को बहादुरी का मेडल जरूर मिले। व्यापार को इन्हीं ने मार गिराया।

(ख) प्रेम का नाम न लो। वह एक पीड़ा थी जो छूट गई। उसकी कसक भी धीरे-धीरे दूर हो जाएगी। राजा मैं तुम्हें प्यार नहीं करती। मैं तो दर्प से दीप्त तुम्हारी महत्वमयी पुरुष-मूर्ति की पुजारिन थी, जिसमें पृथ्वी पर अपने पैरों से खड़े रहने की दृढ़ता थी। इस स्वार्थ-मलिन कलुष से भरी मूर्ति से मेरा परिचय नहीं। अपने तेज की अग्नि में जो सब कुछ भस्म कर सकता हो, उसका दृढ़ता का आकाश के नक्षत्र कुछ बना-बिगाड़ नहीं सकते। तुम आशंका मात्र से दुर्बल-कंपित और भयभीत हो।

अथवा

राजनीति ? राजनीति ही मनुष्यों के लिए सब कुछ नहीं है। राजनीति के पीछे नीति से भी हाथ न धो बैठो, जिसका विश्व मानव के साथ व्यापक संबंध है। राजनीति की साधारण छलनाओं से सफलता प्राप्त करके क्षण-भर के लिए तुम अपने को चतुर

समझने की भूल कर सकते हो, परंतु इस भीषण संसार में एक प्रेम करने वाले हृदय को खो देना, सबसे बड़ी हानि है, शकराज ! दो प्यार करने वाले हृदयों के बीच में स्वर्गीय ज्योति का निवास है।

(ग) यह हमारा सौभाग्य है कि हमें गांधी जी की बकरी मिल गई। कुछ मिलना कुछ खोना भी होता है। हम जितना खोने को तैयार रहते हैं उससे पता चलता है कि हम कितना पाना चाहते हैं। इस बकरी ने हमेशा दिया है। आपको आजादी दी, एकता दी, प्रेम दिया। आज भी बहुत कुछ देने को मुंतजिर है। पर आप लेना भूल गए हैं। क्योंकि आप देना भूल गए हैं।

अथवा

बेटा, बड़प्पन बाहर की वस्तु नहीं- बड़प्पन तो मन का होना चाहिए। और फिर बेटा, घृणा को घृणा से नहीं मिटाया जा सकता। बहू तभी पृथक होना चाहेगी जब उसे घृणा के बदले घृणा दी जाएगी। लेकिन यदि उसे घृणा के बदले स्नेह मिले तो उसकी सारी घृणा धुंधली पड़कर लुप्त हो जाएगी। और महानता भी बेटा, किसी से मनवाई नहीं जा सकती, अपने व्यवहार से अनुभव कराई जा सकती है। ठूंठ वृक्ष आकाश को छूने पर भी अपनी महानता का सिक्का हमारे दिलों पर उस समय तक नहीं बैठा सकता, जब तक अपनी शाखाओं में वह ऐसे पत्ते नहीं लाता, जिनकी शीतल-सुखद छाया मन के सारे ताप को हर ले और जिसके फूलों की भीनी-भीनी सुगंध हमारे प्राणों में पुलक भर दे।

2. 'भारत-दुर्दशा' नाटक में चित्रित 'भारत दुर्देव' और 'सत्यानाश फौजदार' की चारित्रिक विशेषताएँ को स्पष्ट करें। (12)

अथवा

'भारत दुर्दशा' नाटक की प्रासंगिकता का विवेचन कीजिए।

3. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में ध्रुवस्वामिनी और कोमा के माध्यम से स्त्री समस्याओं को उजागर किया गया है। इस कथन की समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की मूल-संवेदना स्पष्ट करें।

4. 'बकरी' नाटक के 'युवक' की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। (12)

अथवा

'बकरी' नाटक में अभिव्यक्त व्यंग्य को स्पष्ट करते हुए इसके प्रतिपाद्य का विवेचन कीजिए।

5. 'स्ट्राइक' एकांकी मध्यवर्गीय समाज के पारिवारिक संबंधों में आए तनाव को अभिव्यक्त करती है- इस कथन की समीक्षा करें। (12)

अथवा

एकांकी के तत्वों के आधार पर 'दीपदान' की समीक्षा करें।